8 मंत्र

(1)

संध्या का समय था। डॉक्टर चड्ढा टेनिस खेलने के लिए तैयार हो रहे थे। मोटर द्वार के सामने खड़ी थी कि कहार डोली लाते दिखायी दिये। डोली के पीछे एक बूढ़ा लाठी टेकता चला आ रहा था। डोली औषधालय के सामने आकर रुक गयी। बूढ़े ने धीरे-धीरे आकर द्वार पर पड़ी हुई चिक से अंदर झाँका। ऐसी साफ-सुथरी जमीन पर पैर रखते हुए भय हो रहा था कि कोई घुड़क न बैठे।

डॉक्टर साहब ने चिक के अंदर से गरजकर कहा- ''कौन है? क्या चाहता है?''

बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा- ''हुजूर, बड़ा गरीब आदमी हूँ। मेरा लड़का कई दिन से बहुत बीमार है।''

डॉक्टर साहब ने कहा- ''कल सवेरे आओ, कल सवेरे। हम इस वक्त मरीजों को नहीं देखते।'' बूढ़े ने घुटने टेककर जमीन पर सिर रख दिया और कहा- ''दुहाई है सरकार की, लड़का मर जायेगा। हुजूर, चार दिन से आँखें नहीं खोली हैं।''

डॉक्टर चड्ढा ने घड़ी देखी। केवल दस मिनट का समय और बाकी है। उन्होंने कहा- ''कल सवेरे आओ। यह हमारे खेलने का समय है।''

बूढ़े ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी और रोते हुए कहा- ''हुजूर, एक

© CBSE IBRC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

निगाह देख लें। बस, एक निगाह! लड़का मर जायेगा। हुजूर, सात लड़कों में से यही एक बच रहा है। छह पहले ही बीमारी से मर गये। हम रो-रोकर ही मर जायेंगे।''

डॉक्टर ने उसकी बातों की ओर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने धीरे से चिक उठायी और वे बाहर निकलकर मोटर की तरफ बढ़ चले। बूढ़ा यह कहते हुए उनके पीछे दौड़ा- ''सरकार, बड़ा धरम होगा। हुजूर, दया कीजिए। लड़के को छोड़कर इस संसार में मेरा कोई और नहीं है।''

डॉक्टर साहब ने मुँह फेर लिया। उसकी तरफ देखा तक नहीं। मोटर में बैठकर बोले- ''कल आना।''

मोटर चली गयी। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की तरह खड़ा रहा। डोली जिधर से आयी थी, उधर ही चली गयी। यहाँ से निराश होकर वह फिर किसी डॉक्टर के पास न गया।

उसी रात हँसता-खेलता सात साल का बालक इस संसार से सिधार गया। बूढ़े माँ-बाप के जीवन का आधार छिन गया।

(2)

कई साल गुजर गये। डॉक्टर चड्ढा ने खूब यश और धन कमाया। उनके दो बच्चे थे- एक लड़का और एक लड़की। लड़की का विवाह हो चुका था। लड़का कॉलेज में पढ़ता था। उसका नाम था कैलाश। आज उसकी बीसवीं सालगिरह थी। कैलाश ने अपने सभी सहपाठी मित्रों को बुलाया था। उसकी एक खास मित्र भी थी- मृणालिनी। कैलाश और मृणालिनी आपस में प्रेम करते थे।

कैलाश को साँप पालने, खिलाने और नचाने का शौक था। उसने तरह-तरह के साँप पाल रखे थे। उसने यह विद्या एक बड़े सपेरे से सीखी थी। साँपों की जड़ी-बूटियाँ जमा करने का उसको मरज था। इतना पता भर मिल जाये कि किसी व्यक्ति के पास कोई अच्छी जड़ी है, फिर उसे चैन न आता। उसे लेकर ही छोड़ता।

मृणालिनी कई बार आ चुकी थी और हर बार साँप देखने का आग्रह करती थी। कैलाश हर बार टाल जाता। आज मृणालिनी ने साँप देखने की ठान ली।

कैलाश- कल जरूर दिखा दूँगा। इस वक्त अच्छी तरह दिखा भी तो नहीं सकता। घर

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

मेहमानों से भरा हुआ है। देखो, कमरे में पैर रखने की जगह तक नहीं है। साँप भीड़ देखकर चौंक जायेंगे।

मृणालिनी की जिद को कुछ और लोगों ने भी हवा दी। कैलाश मृणालिनी और अन्य मित्रों को साँपों के दरबे के आगे ले जाकर बीन बजाने लगा। फिर एक-एक खाना खोलकर एक-एक साँप को निकालने लगा। क्या कमाल था! ऐसा जान पड़ता था कि वे साँप उसकी एक-एक बात मानते हैं। उसने साँपों को हाथ में, गले में डालना शुरू किया। मृणालिनी घबरा रही थी। एक मित्र ने व्यंग्य किया- 'अजी, दाँत तोड़ डाले होंगे।'

कैलाश हँसकर बोला- ''दाँत तोड़ डालना मदारियों का काम है। इनके दाँत नहीं तोड़े गये हैं। कहो तो दिखा दूँ?'' यह कहकर उसने एक काले साँप को पकड़ लिया और बोला- ''मेरे पास इससे बड़ा जहरीला साँप दूसरा नहीं है। इसका काटा तुरंत मर जाता है। इसके काटे की दवा नहीं, कोई मंत्र नहीं। इसके दाँत दिखा दूँ?'' इस पर एक मित्र बोला- ''मुझे तो विश्वास नहीं आता। लेकिन तुम कहते हो तो मान लेता हूँ।''

कैलाश पर इस वक्त भूत सवार था। उसने साँप की गर्दन पकड़कर जोर से दबायी, इतनी जोर से कि उसका मुँह लाल हो गया। साँप ने कैलाश के हाथों ऐसा व्यवहार कभी नहीं देखा था। उसने सोचा कि आज यह मुझे मार डालना चाहता है। अतः वह आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गया।

कैलाश ने उसकी गर्दन खूब दबाकर मुँह खोल दिया और उसके जहरीले दाँत दिखाते हुए बोला- ''जिन सज्जनों को शक हो, आकर देख लें। आया विश्वास या अब भी कुछ शक है?''

मित्रों को दाँत दिखाकर कैलाश ने साँप की गर्दन ढीली कर दी। साँप क्रोध से पागल हो गया था। गर्दन ढीली पड़ते ही उसने फन उठाकर कैलाश की अंगुली में जोर से काटा और वहाँ से भाग निकला। कैलाश की अँगुली से टप-टप खून टपकने लगा। उसने जोर से अँगुली दबा ली और कमरे की तरफ भागा। तुरंत ही एक जड़ी पीसकर लगाई।

मित्रों में हलचल मच गयी। डॉक्टर साहब घबरा गये। डॉक्टर साहब ने चीरा लगाने को कहा, लेकिन कैलाश को जड़ी पर पूरा विश्वास था।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

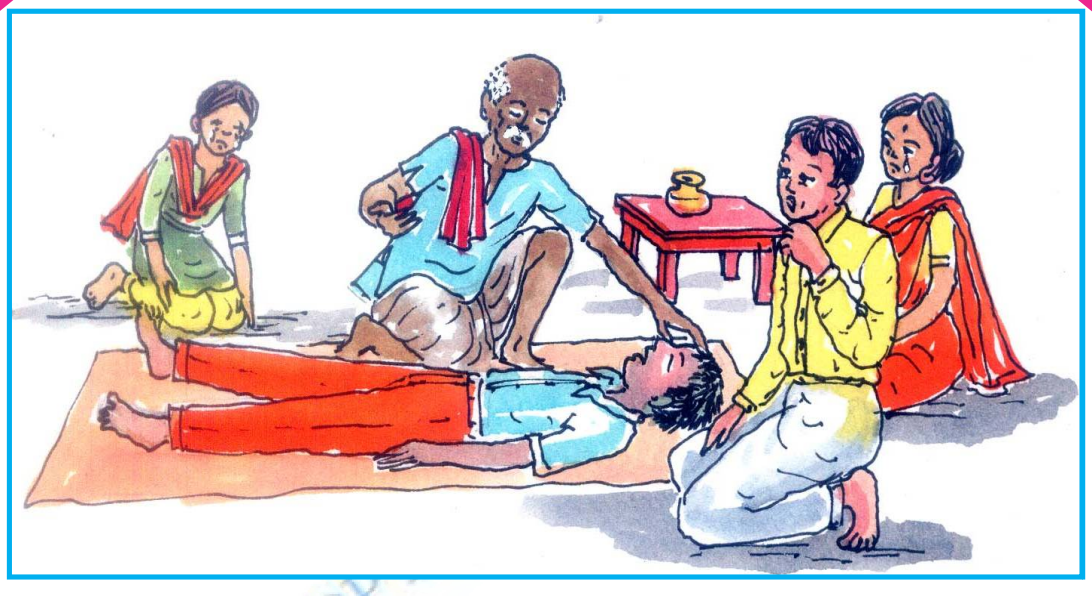

एक ही मिनट में कैलाश की आँखें झपकने लगीं। होठों पर नीलापन दौड़ने लगा। यहाँ तक कि वह खड़ा भी न रह सका। फर्श पर बैठ गया। सारे मेहमान कमरे में जमा हो गये। कैलाश को फर्श पर लिटा दिया गया और पंखा झलने लगे।

एक महाशय बोले– ''कोई मंत्र झाड़नेवाला मिले तो संभव है, जान बच जाये।''

एक मंत्र झाड़नेवाला आया भी, मगर कैलाश की सूरत देखकर उसे मंत्र चलाने की हिम्मत न पड़ी। बोला– ''अब क्या हो सकता है सरकार? जो कुछ होना था, हो चुका।''

घर के सभी लोग रोने लगे।

(3)

शहर से कई मील दूर एक छोटे– से घर में एक बूढ़ा और बुढ़िया अंगीठी के सामने बैठे जाड़े की रात काट रहे थे। मिट्टी के तेल की एक कुप्पी ताक पर जल रही थी। घर में न चारपाई थी, न बिछौना। एक कोने में थोड़ी-सी पुआल पड़ी थी। बुढ़िया दिन भर उपले और सूखी लकड़ियाँ बटोरती थी, बूढ़ा रस्सी बाँटकर बाजार में बेच आता था। यही उनकी जिंदगी थी।

किसी ने द्वार पर आवाज दी– ''भगत, भगत! क्या सो गये? जरा किवाड़ खोलो।''

भगत ने उठकर किवाड़ खोल दिये। एक आदमी ने अंदर आकर कहा– ''कुछ सुना,

डॉक्टर चड्ढा के लड़के को साँप ने काट लिया। तुम चाहो तो चले जाओ, आदमी बन जाओगे। खूब पैसा मिलेगा।''

बूढ़े ने कठोर भाव से सिर हिलाकर कहा- ''मैं नहीं जाता। मेरी बला से·····मरे। मैं उस डॉक्टर को खूब जानता हूँ। मेरा लड़का अंतिम साँसें गिन रहा था। मैं भैया को लेकर उन्हीं के पास गया था। डॉक्टर साहब खेलने जा रहे थे। मैं पैरों पर गिर पड़ा कि एक नजर देख लीजिये। मगर उसने सीधे मुँह बात तक नहीं की। अब जान पड़ेगा कि बेटे का गम कैसा होता है। उस बखत मेरी आँखों में आँसू निकल पड़े थे, पर उन्हें तनिक भी दया न आयी थी।''

''तो नहीं जाओगे? हमने जो सुना था, उसे कह दिया।''

''अच्छा किया, अच्छा किया। कलेजा ठंडा हो गया। तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊगा। एक चिलम और पीऊँगा। अब मालूम होगा लाला को। सारी साहबी निकल जायेगी। हमारा क्या बिगड़ा। लड़के के चले जाने से कोई राज तो नहीं चला गया? जहाँ छह बच्चे गये, वहाँ एक और चला गया। तुम्हारा तो राज सूना हो जायेगा। उसी के वास्ते सबका गला दबा-दबाकर धन जोड़ा था न! अब क्या करोगे?''

आदमी चला गया। भगत ने किवाड़ बंद कर लिये, तब चिलम पीने लगा।

बुढ़िया ने कहा- ''इतनी रात गये जाड़े में कौन जायेगा?''

''अरे, दोपहर ही होती तो भी मैं न जाता। सवारी दरवाजे पर लेने आती, तो भी न जाता। भूला थोड़े ही हूँ। मेरे बेटे को निर्दयी ने एक नजर देखा भी न था।''

भगत के लिए यह जीवन में पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर भी वह बैठा रह गया। अस्सी वर्ष के जीवन में ऐसा कभी न हुआ था कि साँप की खबर सुनकर वह दौड़कर न गया हो। कैसा भी मौसम हो। लेन-देन का विचार कभी मन में आया ही नहीं।

बुढ़िया सो चुकी थी। बूढ़े का मन भारी हो रहा था। उसे चैन न आ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी कोई चीज खो गयी है।

बूढ़ा खड़ा हो गया। उसने अपनी लकड़ी उठायी और धीरे से किवाड़ खोले।

बुढ़िया जाग पड़ी। उसने पूछा- ''कहाँ जाते हो?''

© RSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

''कहीं नहीं, देखता था कि कितनी रात है?''

''अभी बहुत रात है, सो जाओ।''

''नींद नहीं आती।''

''नींद काहे को आयेगी? मन तो चड्ढा के घर लगा हुआ है।''

''चड्ढा ने हमारे साथ कौन-सी नेकी कर दी है, जो वहाँ जाऊँ। पागल नहीं हूँ कि जो मेरे लिए काँटे बोये उसके लिए फूल बोता फिरूँ।''

बुढ़िया फिर सो गयी। भगत ने किवाड़ लगा दिये और फिर आकर बैठ गया। उसने फिर किवाड़ खोले, इतने धीरे कि बुढ़िया को खबर भी न लगे। बाहर निकल आया। भगत ने आगे पैर बढ़ाया। भगत लाठी खट-खट करता लपका चला जा रहा था। उसके मन में कई बार आया कि न जाय। रुक जाय। लेकिन अंतर्मन उसे आगे ठेल रहा था।

इतने में दो आदमी आते दिखायी दिये। दोनों बातें करते चले आ रहे थे- ''चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया, वही तो एक लड़का था।'' भगत के कान में यह आवाज पड़ी। उसकी चाल और भी तेज हो गयी। वह दौड़ने लगा। अपनी उम्र में वह इतना तेज कभी न दौड़ा था। इतने में उसे चड्ढा साहब का घर दिखायी दिया।

रात के दो बज चुके थे। मेहमान विदा हो चुके थे। सभी रो-रोकर थक चुके थे। सहसा भगत ने द्वार पर पहुँचकर आवाज दी। डॉक्टर साहब बाहर आये। देखा, एक बूढ़ा आदमी खड़ा है- कमर झुकी हुई, पोपला मुँह, भौंहें तक सफेद हो गयी हैं।' लकड़ी के सहारे काँप रहा है।

बूढ़े ने कहा- ''भैया कहाँ हैं? जरा मुझे दिखा दीजिए।''

चड्ढा ने कहा- ''चलो देख लो, मगर तीन-चार घंटे हो गये। जो कुछ होना था सो हो चुका। बहुतेरे झाड़ने-फूँकने वाले देखकर चले गये।''

डॉक्टर को आशा तो नहीं थी। वे भगत को अंदर ले गये। उसने कैलाश की हालत एक मिनट तक देखी फिर मुस्कुराकर कहा- ''अभी कुछ नहीं बिगड़ा है बाबूजी! आप पानी का इंतजाम करवाइये।''

लोगों ने पानी भर-भरकर कैलाश को नहलाना शुरू कर दिया। बूढ़ा भगत खड़ा मुस्कुरा-मुस्कुराकर मंत्र पढ़ रहा था। एक बार मंत्र समाप्त हो जाता, तब वह एक जड़ी कैलाश

© RSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEB COPY

को सुँघा देता। इस तरह न जाने कितने घड़े कैलाश के सिर पर डाले गये और न जाने कितने मंत्र भगत ने फूँके।

सुबह होते-होते कैलाश ने लाल-लाल आँखें खोलीं, अंगड़ाई ली और पीने को पानी माँगा।

यह देख भगत वहाँ से निकलकर घर की तरफ लपका। यहाँ चारों ओर भगत की तलाश होने लगी। और भगत लपका हुआ चला जा रहा था कि बुढ़िया के उठने के पहले घर पहुँच जाये।

जब मेहमान लोग चले गये तो डॉ. साहब ने नारायणी से कहा- ''बूढ़ा न जाने कहाँ चला गया। एक चिलम तम्बाकू का भी हकदार न हुआ।''

नारायणी- ''मैंने तो सोचा था इसे कोई बड़ी रकम दूँगी।''

चड्ढा- ''रात को तो मैंने नहीं पहचाना, पर जरा साफ होने पर पहचान गया। एक बार यह एक मरीज को लेकर आया था। मुझे अब याद आता है कि मैं खेल के लिए जा रहा था और मैंने मरीज को देखने से इंकार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे अब खोज निकालूँगा और उसके पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह जानता हूँ। उसका जन्म यश की वर्षा करने ही के लिए हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है जो अब से जीवनपर्यन्त मेरे सामने रहेगा।''

-प्रेमचन्द

शब्दार्थ

चिक - बाँस की पतली कमाची से बना पर्दा
दुहाई - रक्षा के लिए की गयी पुकार
सालगिरह - वर्षगाँठ
यश - इज्जत, प्रतिष्ठा
औषधालय - दवाखाना
सिधार - मर जाना, मृत्यु
निर्दयी - दया नहीं करने वाला
मरज - खराब आदत, रोग

प्रश्न अभ्यास

पाठ से-

1. डॉक्टर के लड़के कैलाश ने साँप को पाल रखा था। फिर भी साँप ने उसे क्यों काटा ?
2. डॉ. चड्ढा बूढ़े व्यक्ति को क्यों खोज रहा था ?
3. डॉक्टर के लड़के कैलाश को साँप ने काट लिया। इस खबर को सुनकर बूढ़े व्यक्ति को नींद क्यों नहीं आ रही थी ?

पाठ से आगे-

1. डॉक्टर द्वारा बूढ़े के लड़के को देखने से इंकार करने पर बूढ़ा व्यक्ति कैसा महसूस कर रहा होगा- अपने शब्दों में लिखिए ?
2. समाज में गरीबों का जीवन स्तर सुधारने के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे ?
3. इस पाठ में आपको किसका चरित्र सबसे अच्छा लगा और क्यों ?
4. इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

व्याकरण

1. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए

(क) चैन न आना (ख) हवा देना

(ग) पगड़ी उतारकर रखना (घ) भूत सवार होना

(ङ) कलेजा ठण्डा होना (च) सीधे मुँह बात न करना

2. निम्नलिखित शब्दों में 'अ' उपसर्ग लगाकर विलोम बनाइए-

(क) धर्म ..... (ख) ज्ञान .....

(ग) भाव ..... (घ) सहमत .....

(ङ) सावधानी .....

कुछ करने को-

1. समाज की कुरीतियों, भेदभावों से सम्बन्धित कहानियों का संकलन कीजिए तथा उसमें से कोई एक कहानी जो आपको अच्छी लगी हो उसे अपने मित्रों को सुनाइए।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED